अमर उजाला

प्रवाह

नई दिल्ली । सोमवार, 6 मई 2019

निर्भीक पत्रकारिता का आठवां दशक
स्थापना वर्ष : 1948

सफल व्यक्ति जीवन में सकारात्मक ध्यान बनाए रखते हैं, उन्हें फर्क नहीं पड़ता कि आसपास क्या चल रहा है।
-जैक कैनफील्ड

अमेरिकी लेखक

श्रीलंका के सेना प्रमुख ने पिछले महीने वहां हमला करने वाले आतंकियों के भारत आने से संबंधित जो खुलासे किए हैं, वे बेहद चौंकाने वाले हैं और आंतरिक सुरक्षा के मोर्चे पर सतर्कता बरतने की मांग करते हैं।

आंतरिक सुरक्षा की चुनौती

श्रीलंका के सेना प्रमुख का यह खुलासा बेहद चौंकाने वाला और गंभीर है कि उनके यहां के आत्मघाती हमलावरों में से कुछ ने प्रशिक्षण और दूसरे विदेशी संगठनों के साथ संपर्क बनाने के लिए कश्मीर और केरल का दौरा किया था। उनका यह भी कहना है कि हमले की भीषणता को देखते हुए उसमें बाहरी हाथ होने की आशंका से इनकार नहीं किया जा सकता। गौरतलब है कि विगत 21 अप्रैल को श्रीलंका में हुए आठ बम विस्फोटों में सैकड़ों लोग मारे गए थे। उसकी जिम्मेदारी आईएस ने ली थी, जबकि श्रीलंका की सरकार उसके पीछे स्थानीय आतंकवादी संगठन नेशनल तौहीद जमात का हाथ मानती है। हालांकि हमारी केंद्रीय सुरक्षा एजेंसियों ने श्रीलंका के सेना प्रमुख के दावे का खंडन किया है। उनका कहना है कि आतंकी हमलों के बाद आव्रजन दस्तावेजों में ऐसा कोई रिकॉर्ड नहीं मिला है, जिससे श्रीलंका के दावे की पुष्टि होती हो। लेकिन एनआईए द्वारा पिछले दिनों केरल और तमिलनाडु के कई इलाकों में मारे गए छापे और गिरफ्तारियों को भी हल्के में नहीं लिया जा सकता। उल्लेखनीय है कि तमिलनाडु में भी श्रीलंका के नेशनल तौहीद जमात की तरह तमिलनाडु तौहीद जमात संगठन है, जिसका नाम अक्सर आतंकी घटनाओं से जुड़ता रहा है। ऐसे ही, केरल से रियास अबूबकर की गिरफ्तारी से वहां आईएस के स्लीपर सेल की मौजूदगी की आशंका मजबूत होती है। केरल वही राज्य है, जहां से कुछ युवा आईएस में शामिल होने के लिए सीरिया गए थे। जहां तक कश्मीर की बात है, तो हाल के वर्षों में वहां के युवाओं में अलगाववादी भावना मजबूत हुई है। अब केरल समेत तमिलनाडु और दक्षिण भारत के कुछ और इलाकों में आईएस जैसे आतंकी संगठन के मददगारों के होने की बात भी उतनी ही चिंताजनक है। तब तो खासकर और भी, जब लोकसभा चुनाव में राष्ट्रीय सुरक्षा को बड़ा मुद्दा बनाया गया है। साफ है कि बाहरी दुश्मनों से देश की रक्षा करने को महत्व देने के साथ-साथ आंतरिक सुरक्षा पर भी उतना ही ध्यान देना होगा। कश्मीर में बढ़ती अलगाववादी भावना पर देश का जितना ध्यान है, दक्षिण भारत में आईएस और दूसरे आतंकवादी संगठनों की पैठ और प्रसार पर उतना फोकस नहीं नजर आता। श्रीलंका के सेना प्रमुख के दावे का खंडन करने के बजाय आंतरिक सुरक्षा पर ध्यान देना ही समय की मांग है।

मतदाताओं का मन

भारतीय चुनावों से संबंधित एक शाश्वत सत्य यह है कि इनमें 'विशेषज्ञ' अक्सर गलत साबित हो जाते हैं। इसकी वजह स्पष्ट है। और सत्रहवीं लोकसभा के लिए हो रहे चुनाव के समय इसका जिक्र करना मौजूं भी है। जैसे कि उस दिन एक नामचीन टेलीविजन पत्रकार ने कहा, 'लोग कैमरे के सामने जो कुछ भी कहते हैं, अकेले में आमने-सामने मिलने पर उससे अलग बात कहते हैं।'

भारतीय मतदाता, उनमें भी खासकर ग्रामीण मतदाता बहुत चालाक होते हैं। वे जानते हैं कि चुनाव के समय अचानक उनके इलाके में टपक पड़ने वाले और उनसे राय मांगने वाले पत्रकारों को सच बताना जोखिम भरा हो सकता है, इसलिए वे जमीनी वास्तविकताएं बताने के बजाय यथास्थिति को स्वीकार करने को ही प्राथमिकता देते हैं।

ग्रामीण मतदाता वोटिंग पैटर्न के बारे में बाहर से आए पत्रकारों को सच्चाई बताने का साहस नहीं करते, बल्कि ज्यादातर वही कहते हैं, जो पत्रकारों या वहां मजबूत राजनीतिक दल के अनुकूल हो। इसको इस तरह भी समझा जा सकता है कि ट्रेन या बस में, या हाइवे पर स्थित चाय की दुकानों पर कोई मतदाता जो कुछ भी कहता है, वह अमूमन सच नहीं होता, क्योंकि जब वह पत्रकारों के सवालों के जवाब दे रहा होता है, तब आसपास खड़े और भी अनेक लोग उसे सुन रहे होते हैं।

चूंकि उनमें से कुछ लोग उसके परिचित हो सकते हैं, इसलिए वह अपने मन की बात कहकर किसी से शत्रुता मोल नहीं ले सकता। इसके विपरीत, एक पत्रकार का सच्चाई से सामना तब होता है, जब वह मुख्य सड़क को

चुनाव के समय हम मतदाताओं से जो कुछ सुनते हैं, वह इस पर भी निर्भर करता है कि हमने ये बातें कहां सुनी हैं। जो इस चुनावी सच्चाई से परिचित हैं, वही वास्तविकता का बेहतर आकलन कर सकते हैं।

पत्रलेखा चटर्जी, वरिष्ठ पत्रकार

छोड़कर दूर के गांव में निकल जाता है और वहां लोगों से उनके घर में जाकर मिलता है। चूंकि घर के अंदर मौजूद लोग अपने ही होते हैं, लिहाजा वहां कही गई बातें अमूमन सच होती हैं। यह बात खासकर उन मतदाताओं के बारे में सच होती है, जो दबाव में होते हैं और समाज के हाशिये पर भी होते हैं। इनमें शहरी निम्न वर्ग के लोग, गरीब दलित, कर्ज में डूबे किसान के अलावा वे लोग भी होते हैं, जिन्हें लगता है कि उनकी आवाज नहीं सुनी जाती।

हाल में ही उत्तर प्रदेश में, जो कि देश के मतदाताओं का मिजाज मापने का बैरोमीटर है, एक लंबी सड़क यात्रा करते हुए, मुझे भी कई मूल्यवान सूत्र हाथ लगे। उसमें से एक बात यही है कि लोग क्या कह रहे हैं, वह महत्वपूर्ण नहीं है, महत्वपूर्ण यह है कि वे कौन हैं, और कहां आपसे बात कर रहे हैं। और इसके बाद भी उनकी कथनी और करनी में फर्क हो सकता है। कोई कुछ भी कहे, सच्चाई तो आखिरकार 23 मई को ही सामने आएगी।

छोटे शहरों, हाइवे पर स्थित ढाबों और चाय की दुकानों पर मुझे ज्यादातर वही बातें सुनने को मिलीं, जो कद्दावर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और उनकी पार्टी भाजपा द्वारा राष्ट्रीय सुरक्षा के संबंध में लगातार दिए जा रहे तर्कों से संबंधित थीं। उत्तर प्रदेश के खासकर शहरी इलाकों में मुझे यही बातें सुनने को मिलीं। वाराणसी में एक ब्यूटी पार्लर में काम करने वाले युवक ने मेरे सामने यह स्वीकारा कि उसके अपने जीवन में कोई उल्लेखनीय बदलाव नहीं आया है, लेकिन वह नई सड़कें, पुल और फ्लाइओवर से प्रभावित है। उसका भी मानना है कि सिर्फ नरेंद्र मोदी ही पाकिस्तान और देशद्रोहियों को सबक सिखा सकते हैं।

पर लखनऊ-आगरा एक्सप्रेस-वे से गुजरते हुए और कन्नौज जिले के बेहरीन गांव में लोगों से बात करते हुए पता चला कि वहां के लोगों ने सत्ताधारी पार्टी से किस तरह दूरी बना ली है। उस गांव के किसान आवारा पशुओं के उपद्रव और इससे होने वाले फसल के नुकसान के कारण क्षुब्ध हैं।

उस गांव के ही एक बुजुर्ग किसान राजकिशोर ने शिकायती लहजे में कहा कि रात में अपनी फसलों को आवारा पशुओं के हमले से बचाने के लिए गांव के लोगों को रात भर जागना पड़ता है, 'प्रधानमंत्री कहते हैं कि वह चौकीदार हैं, पर असल चौकीदार तो किसान हैं। हम दिन को चिलचिलाती धूप में खेतों में काम करते हैं और रात को अपनी फसल की रखवाली करने के लिए जागने को मजबूर हैं। इस गांव का कोई भी आदमी गाय पालना नहीं चाहता, क्योंकि जब वे बूढ़ी हो जाएंगी, तब उनका हम क्या करेंगे? तब उन्हें कौन चारा देगा? पहले हम बूढ़ी गायें बेच देते थे, पर अब ऐसा नहीं कर सकते। इसलिए हम अब भैंस पालने लगे हैं। इसके बावजूद दूसरे गांवों से गायें आ जाती हैं। जब हमारे पास अपने पशुओं को चारा देने के लिए ही पैसे नहीं हैं, तब हम दूसरे की गायों के लिए घास और चारे का प्रबंध भला किस तरह कर सकते हैं?'

बहुत सारे किसान इस बात से खिन्न दिखे कि आवारा गायों को रखने के लिए पर्याप्त संख्या में गोशालाओं का निर्माण नहीं किया गया है, ऊपर से गायों को बेचना कठिन है। ऐसे में किसानों के सामने अपनी बूढ़ी गायों को खुला छोड़ देने के अलावा और कोई विकल्प नहीं बचा है, क्योंकि वे उन गायों के घास-चारे का बोझ नहीं उठा सकते, जो दूध नहीं देतीं।

उसी गांव की बी.एससी. प्रथम वर्ष की छात्रा कुंती की शिकायतें अलग हैं। उसका कॉलेज गांव से सात किलोमीटर दूर है और उसे लगभग रोज रिक्शे से यह दूरी तय करनी पड़ती है। वह बताती है कि उसके कॉलेज में कोई ढंग की प्रयोगशाला नहीं है। बेहरीन गांव में शिक्षित युवा तो बहुत हैं, पर रोजगार की कमी है, जिससे परेशानी है। ग्रामीण क्षेत्रों में लड़कियों को उनके परिवार वाले निजी क्षेत्र में नौकरियां नहीं करने देते। गांव के बुजुर्ग कहते हैं कि सिर्फ वही देश की चिंता क्यों करें।

यह कहना कठिन है कि चुनावी दौरे में मैंने जिन लोगों से मुलाकातें कीं, उन्होंने किसे वोट दिया है या किसे वोट देंगे। पर चुनाव के इस समय में हम जो कुछ भी सुनते हैं, वह इस पर भी निर्भर करता है कि हमने ये बातें मुख्य सड़क से कितनी दूर जाकर सुनी हैं। जो लोग देश की इस चुनावी सच्चाई से परिचित हैं, वही वास्तविकता का बेहतर आकलन करने में सक्षम हो सकते हैं।

अंतर्ध्वनि

>> रघुवीर सहाय

जब मन अविश्वास से दुर्बल हो उठे तब मौन ही शक्ति देता है

***कभी** आपने सोचा है कि जो लोग अधिक बात करते हैं, उनसे हम कतराने क्यों लगते हैं? उसका मतलब यही होता है कि अमुक जो कुछ बोलता है, हम सुनना नहीं चाहते। शताब्दियों से लोग सुनने के उत्सुक चले आ रहे हैं। और इस दिशा में सबसे अधिक उपलब्धि उन कवियों को हुई है, जो इधर सृष्टि का निखिल मौन संगीत सुनते रहे, प्रेमिका का मूक स्वरों में अनुरोध भी। सुना है, वाल्मीकि भी कभी मौन थे, व्यथा के तीखे शरों से तिलमिला कर अचानक उनका कंठ फूटा।*

बोलना और सुनना एक ही क्रिया के दो भाग हैं; अपने में अलग-अलग ये संपूर्ण नहीं हैं। किंतु आज कितने ही लोग बोलना चाहते हैं, पर उन्हें बोलने नहीं दिया जाता और लोग उन्हें सुनना चाहते हैं, पर सुन नहीं पाते। कितने ही लोग बोलते हैं, और उन्हें कोई सुनता नहीं। कितने ही लोग सुनना नहीं चाहते, पर उन्हें सुनना पड़ता है। बोलना सुनने से कुछ बड़ा होते हुए भी नितांत सुनने पर आश्रित है। कोई आपसे कुछ कह रहा हो और आप सुन न रहे हों, तो संभव है आपको अपनी अन्यमनस्कता के लिए कुछ कटु-वचन सुनने पड़ें। आप बोलनेवाले के ऊंचे स्थान पर तभी तक रहते हैं जब तक उनको मानते रहते हैं, उनका मान द्रवित हुआ नहीं कि फिर आप फिर श्रोता बन गए। यों, मौन रहना, सुनते हैं, स्वास्थ्यदायक भी होता है। मौन-व्रत रखने से वृथा नष्ट होनेवाली शक्ति संचित होती है। जब मन अविश्वास से दुर्बल हो उठे, तब मौन ही शक्ति देता है। मैं मौन रहूं तो पता नहीं किस वक्ता की अवज्ञा कर बैठूं, क्योंकि मौन रहते-रहते यह भी लग सकता है कि आपकी बात नहीं सुन रहा और आपको लगने लगे कि मेरा चुप रहना मूर्खता की निशानी है। मौन हो जाता हूं तो लगता है कि चारों ओर से उठ रहा है एक हाहारव और अंतर से उठ रहा है एक विद्रोह का रणघोष।

-प्रसिद्ध हिंदी कवि

मंजिलें और भी हैं

>> शकुंतला मजूमदार

कुत्ते के घसीटे जाने के दृश्य ने पशुप्रेम के लिए प्रेरित किया

हम तब कोलकाता में रहते थे। मैं सातवीं क्लास में थी और स्कूल जा रही थी। हमारी स्कूल बस के आगे एक कूड़ा गाड़ी जा रही थी। उस के पीछे एक कुत्ता बंधा हुआ था, वे उसे घसीटते हुए ले जा रहे थे। लोगों का कहना था कि वह कुत्ता पागल है। पूरे रास्ते मैंने उसको खून में लथपथ देखा, फिर भी किसी को उस पर दया नहीं आई। उस घटना ने मुझे हिलाकर रख दिया। सबसे ज्यादा दुख मुझे इस बात का हुआ कि उस समय मैं कुछ नहीं कर पाई। वहीं से मेरे दिल में घर से बाहर भी जानवरों के लिए कुछ करने का जज्बा जागा। बचपन से ही मैंने देखा कि हमारे घर में बहुत से पशु-पक्षी मौजूद रहते थे, जिन्हें मेरी मां अक्सर घायल अवस्था में घर लातीं, फिर हम उनकी देखभाल करते। वर्ष 1982 में मैं मुंबई आ गई। पढ़ाई के दिनों से ही मैं मदर टेरेसा चैरिटी होम से जुड़ गई। लेकिन जानवरों के प्रति मेरा प्रेम वैसा ही बना रहा, जैसा कोलकाता में था।

वर्ष 1994 में मैं 'सोसाइटी फॉर प्रोटेक्शन ऑफ एनिमल्स ऐंड नेचर' (एसपीसीए) से जुड़ गई। यहां पर काम करते हुए मुझे ठाणे के इलाके में जानवरों के साथ हो रही हिंसा की बहुत-सी खबरें मिलती थीं। मैंने इस इलाके में एसपीसीए शुरू करने का निर्णय लिया और व्यक्तिगत तौर पर वर्ष 2002 में ठाणे एसपीसीए की शुरुआत की। हालांकि यहां तक का मेरा सफर आसान नहीं रहा। इन बेजुबान जीवों की आवाज बनने के लिए मुझे बहुत-सी चुनौतियों का सामना करना पड़ा। दशकों पहले हमारे यहां जानवरों के प्रति हिंसा के खिलाफ कानून (द प्रिवेंशन ऑफ क्रुएलिटी टू एनिमल्स ऐक्ट, 1960) बन चुका है। इस कानून के तहत किसी जानवर को नुकसान पहुंचाने पर सजा का प्रावधान भी है। लेकिन इस कानून के बारे में आम नागरिकों को क्या, बहुत से पुलिस अधिकारियों को भी पता नहीं होता। इस वजह से मैं अगर किसी भी व्यक्ति के खिलाफ मुकदमा दायर करवाना चाहती, तो पुलिस वाले मुझे वापस भेज देते। एक बार पर मुझे फोन पर धमकी भी दी गई कि अगर जानवरों के लिए काम करना बंद नहीं किया, तो वे मेरी बेटी को अगवा कर लेंगें। इस तरह की बात सुनकर कुछ पलों के लिए मैं कांप गई, पर मुझे पता था कि मैं कुछ गलत नहीं कर रही हूं। अपने घर के पास ही मैं रोज एक कुत्ते को खाना खिलाती थी। पर वह किसी बीमारी के चलते ज्यादा जी नहीं पाया। मैंने और मेरे पड़ोसियों ने बहुत कोशिश की थी कि उसे सही उपचार मिल सके, पर उसकी बीमारी तक का पता नहीं चला। इस घटना के बाद मुझे जानवरों के लिए स्वास्थ्य सुविधाओं पर काम करने की जरूरत महसूस हुई। मेरे जज्बे को देखते हुए समाजसेवी डॉ. नानजीभाई खिमजीभाई ठक्कर ने जानवरों के लिए एक अस्पताल शुरू करने लिए जमीन दी। वर्ष 2005 में हमने 'ठाणे एसपीसीए इमरजेंसी एनिमल केयर सेंटर' की शुरुआत की। इस काम में मुझे 'एनिमल वेलफेयर बोर्ड ऑफ इंडिया', वन-विभाग और अन्य बहुत-से अधिकारियों की सहायता मिली।

मैं और मेरी टीम के लोग अब तक एक लाख से भी ज्यादा जानवरों का इलाज व संरक्षण कर चुके हैं।

आज एसपीसीए के पास 25 लोगों का स्टाफ है। वे हर तरह के छोटे-बड़े जानवरों के बचाव कार्य व संरक्षण के लिए काम करते हैं। मैं और मेरी टीम अब तक एक लाख से भी ज्यादा जानवरों का इलाज व संरक्षण कर चुके हैं। मुझे इस काम के लिए वर्ष 2016 में 'नारी शक्ति पुरस्कार' से भी सम्मानित किया गया। मैं सिर्फ इतना चाहती हूं कि अगर आप जानवरों से प्यार नहीं कर सकते, तो उनसे नफरत भी न करें।

-विभिन्न साक्षात्कारों पर आधारित।

राहुल के दावों का सच

चुनावों के समय हर राजनेता कुछ हद तक झूठ का सहारा लेता है, लेकिन क्या यह भी जरूरी नहीं है कि इतने बड़े राजनीतिक दल के अध्यक्ष थोड़ी जिम्मेदारी दिखाएं? मतदाता अब राजनेता से अधिक समझदार हो गए हैं।

राहुल गांधी के एक झूठ को लेकर सर्वोच्च न्यायालय में अभी कार्यवाही चल ही रही है कि कांग्रेस अध्यक्ष ने एक और झूठ बोल डाला। बहुत बड़ा झूठ। एक आम सभा को संबोधित करते हुए उन्होंने कह दिया कि नरेंद्र मोदी की सरकार ने एक कानून पारित किया है, जिसके तहत पुलिस वालों को आदिवासियों पर गोली चलाने का अधिकार दिया गया है। मैंने जब उनको यह कहते सुना, तो इतनी हैरान हुई कि यूट्यूब पर जाकर उस भाषण को खोजा। इस खोज में कांग्रेस अध्यक्ष के कई और चुनावी भाषण सुनने को मिले, जिनमें कई सारे और झूठ थे।

ओडिशा में आदिवासियों की सभा को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि कांग्रेस आदिवासियों को उनकी जमीन रखने का अधिकार देने का काम कर चुकी है, लेकिन मुख्यमंत्री नवीन पटनायक उनसे उनकी जमीनें छीन लेना चाहते हैं, ताकि वह इन जमीनों को उद्योगपतियों को दे सकें। उन्होंने यह नहीं बताया कि इन जमीनों पर जब कारखाने बनते हैं, तो रोजगार के अवसर पैदा होते हैं आदिवासी युवाओं के लिए। इसके बदले उन्होंने यह कहा कि आदिवासी युवाओं को ओडिशा के मुख्यमंत्री न रोजगार देना चाहते हैं, न शिक्षा। इस तरह की झूठी बातें कांग्रेस अध्यक्ष चुनाव अभियान शुरू होने से पहले भी कहते आए हैं।

राफेल सौदे को लेकर उन्होंने बार-बार कहा है कि प्रधानमंत्री ने इस सौदे में से 30,000 करोड़ रुपये चोरी करके अपने दोस्त अनिल अंबानी को दे दिए हैं। आज तक उन्होंने इसका कोई सुबूत पेश नहीं किया है। लेकिन यह झूठ बोलते जाते हैं, शायद इस उम्मीद से कि जब किसी झूठ को बहुत बार बोला जाता है, तो वह लोगों के मन में धीरे-धीरे सत्य बन जाता है। सो वह यह भी बोलते हैं बार-बार कि मोदी ने नोटबंदी सिर्फ इसलिए करवाई थी, ताकि 'अपने 15 उद्योगपति दोस्तों' को लाभ पहुंचा सकें। कभी वह यह भी कह डालते हैं कि गरीबों का पैसा हथियाने के लिए नोटबंदी की गई थी। माना कि चुनावों के समय हर राजनेता कुछ हद तक झूठ का सहारा लेता है, लेकिन क्या यह भी जरूरी नहीं है कि इतने बड़े राजनीतिक दल के अध्यक्ष थोड़ी जिम्मेदारी दिखाएं?

मजे की बात यह है कि राहुल गांधी जब भी मोदी का नाम लेते हैं, तो उन पर सबसे बड़ा आरोप उनका यही रहता है कि मोदी ने झूठ बोलकर 2014 का चुनाव जीता था। वह बैंक खातों में 15 लाख रुपये डालने वाला उदाहरण दोहराते हैं। सच पूछिए तो यह भी झूठ है।

तवलीन सिंह

मोदी का वह भाषण ऑनलाइन अगर आप सुनने का कष्ट करेंगे, तो पाएंगे कि उन्होंने सिर्फ यह कहा था कि विदेशी बैंकों में इतना पैसा है भारत का कि अगर उसको वापस लाया जाए, तो शायद देश के हर नागरिक के बैंक खाते में 15 लाख रुपये डाल दिए जा सकेंगे। इस बात को तोड़-मरोड़ कर लोगों को गुमराह करना गलत है। लेकिन ऐसा लगता है कि राहुल गांधी सत्ता में अपने परिवार को वापस लाने के लिए कोई भी झूठ बोल सकते हैं। कांग्रेस अध्यक्ष शायद अब भी उस जमाने में जी रहे हैं, जब देश के मतदाताओं को उल्लू बनाना आसान था राजनेताओं के लिए।

मेरी उम्र के पत्रकारों को उनकी दादी का दौर अच्छी तरह याद है, जब लोग कहा करते थे कि वह इंदिरा गांधी को वोट दे रहे हैं, सिर्फ इसलिए कि उनको उनका चेहरा पसंद है। तब लोग राजनेताओं को भगवान का रूप मानते थे। पर अब ऐसा नहीं है। अब मतदाताओं का दिल झूठ बोलकर या करिश्मा के बल पर जीतना इतना आसान नहीं है। लगता है कि मतदाता राजनेताओं से अधिक सयाने हो गए हैं।

हरियाली और रास्ता

राज, सुमन और बच्चे

प्रोफेसर मनन की कहानी, जिन्होंने छात्रों को जीवन का एक अनूठा पाठ पढ़ाया।

प्रोफेसर मनन जाने-माने मनोवैज्ञानिक थे। एक बार वह अमेरिका की एक नामचीन यूनिवर्सिटी में पढ़ाने गए। उन्होंने एक साधारण-सी कहानी छात्रों को सुनाई। पर उस कहानी ने छात्रों की सोच पर खासा असर डाला। राज और सुमन बहुत दिनों बाद एक दूसरे से सपरिवार मिले। दोनों के बच्चे लगभग एक ही उम्र के थे। खा-पीकर वे लोग एक पार्क में घूमने गए। वहां ढेर सारे पेड़ थे। राज का बेटा दस साल का और सुमन का बेटा बारह साल का था। सारे लोग एक पेड़ के नीचे बैठकर बातें कर रहे थे, जबकि दोनों बच्चे पेड़ पर उछल-कूद मचा रहे थे। राज हमेशा जल्दी में रहता था। कई बार वह बिना सोचे-समझे काम करता था। जबकि सुमन शांत स्वभाव की थी। दोनों अपनी जिंदगी में अच्छे मुकाम पर पहुंच चुके थे। उनकी बातें चल ही रही थीं कि राज की पत्नी ने देखा, दोनों बच्चे पेड़ की ऊंची शाखा पर जाकर बैठे हैं। वजन ज्यादा होने के कारण शाखा टूटने लगी। राज चिल्लाया, बंटी, देखो, गिर जाओगे। वहीं सुमन चिल्लाई, डाल पकड़े रहना, हम आ रहे हैं। जब तक वे वहां पहुंचते, राज का बेटा गिर गया था और उसे चोट आई। पर सुमन का बेटा शाखा को पकड़े रहा और बच गया। प्रोफेसर ने छात्रों से पूछा, एक बच्चे के गिरने और दूसरे के बच जाने की वजह क्या आप जानते हैं? फिर वह खुद ही कहने लगे कि इसकी वजह उनके पिता-माता की सोच है। जब राज ने बंटी से कहा कि देखो, गिर जाओगे, तो बंटी के दिमाग में पेड़ से गिरने की तस्वीर बनी। वहीं सुमन के बेटे के दिमाग में तस्वीर बनी कि वह शाखा पकड़े हुए है और मां उसे बचा रही हैं। यानी हम जो बोलते हैं, उसका काफी असर हमारी सोच और कर्म पर होता है। इसलिए हमें हमेशा सकारात्मक बात करनी चाहिए। छात्रों को बेहद उपयोगी सबक मिला।

हमारी कही गई बात हमारी सोच और संस्कार को ही दिखाती है।

खुली खिड़की

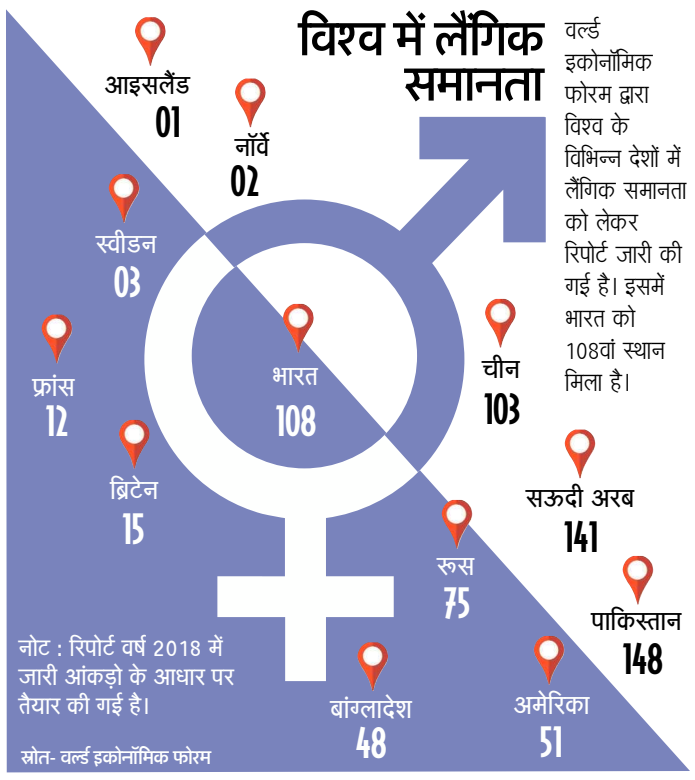

खून और दूध

गुरु नानक लोगों को उपदेश देते हुए एक गांव में पहुंचे। वहां वह एक गरीब बढ़ई के घर ठहरे, जिसका नाम लालो था। उसी गांव में एक धनाढ्य व्यक्ति रहता था, जिसका नाम मलिक भागो था। एक दिन मलिक भागो ने गांव के सारे लोगों को भोजन के लिए निमंत्रित किया। सारे लोगों के खाना खा चुकने पर उसने नौकरों से पूछा कि गांव में कहीं कोई आदमी बिना खाए तो नहीं है ? इस पर नौकरों ने बताया कि लालो के घर में एक साधु आया है जो भोजन से वंचित रह गया है। भागो ने गुरु नानक को बुलाया तथा उनसे पूछा, आप मेरे यहां भोजन करने क्यों नहीं आए? गुरु नानक ने कहा, अब आया हूं। नौकरों ने उनके सामने तरह-तरह के पकवान लाकर रखे। तब गुरु नानक ने लालो से भी घर से भोजन लाने को कहा। वह घर जाकर रोटियां ले आया। गुरु नानक ने भागो की रोटी लेकर उसे दबाया, तो उसमें से खून निकलने लगा। फिर उन्होंने लालो की रोटी दबाई, तो उसमें से दूध निकलने लगा। यह देख वहां उपस्थित लोग चकित हो गए। तब गुरु नानक देव जी ने बताया कि भागो ने गरीबों को लूटा है, इसलिए उसकी रोटी में गरीबों का खून है, जबकि लालो की कमाई ईमानदारी की है, अतः उसकी रोटी से दूध निकला। यह सुनकर भागो नानक के चरणों में गिर पड़ा और उनसे क्षमा मांगकर कहने लगा कि आगे से मैं मेहनत की कमाई खाऊंगा और दूसरों को कष्ट नहीं दूंगा।

सत्संग

–संकलित